''मैं विश्वास कर चुकी हूं''

(11:1-57)

लेखक की टिप्पणी: इस सामग्री के प्रस्तुत किए जाने के पिछले सप्ताह, यहां कलीसिया का एक 23 वर्षीय सदस्य जेमी गोवेन, हार्डिंग यूनिवर्सिटी के कैटवॉक हाई के बैंसन ऑडिटोरियम के ऊपर से गिर गया। ऊपर चढ़ते हुए, उसका हाथ फिसलने से वह पतली टायलों वाली छत से पचास फुट नीचे पक्के फर्श पर गिर गया। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि वह बच गया और तीन दिन अस्पताल में रहने के बाद स्वस्थ होकर घर लौट आया था। आज वह पूरी तरह स्वस्थ है, पर कई दिन तक उस भयानक दुर्घटना से वह मण्डली, जहां मैं हर रविवार को प्रचार करता (संदेश देता) हूं, डर गई थी। हादसे वाले सप्ताह के बाद, कलीसिया ने एक विशेष प्रार्थना सभा की इच्छा जताई जिसमें जेमी के जीवन के लिए परमेश्वर का धन्यवाद और विशेष रूप से उसकी महिमा गाई जाए। उसके परिणामस्वरूप प्रार्थनापूर्ण यह प्रवचन पांच भागों में बंट गया और इसके साथ विशेष गीतों के साथ जिनमें इस अद्‌भुत पाठ की सच्चाइयां भी हैं।

प्रेम हमेशा दोबारा शुरू होता है! किसी को लग सकता है कि वह प्रेम को मां की गोद में सुरक्षित बच्चे की तरह जानता है। एक युवती को लग सकता है कि प्रेमी को पाकर उसने प्रेम को पा लिया है। एक पुरुष निश्चिंत हो सकता है कि उसने उस स्त्री को पाकर जिससे वह विवाह करना चाहता है अन्ततः प्रेम को पा लिया है। माता-पिता द्वारा नवजात शिशु को अपनी बाहों में लेने पर लग सकता है कि प्रेम यही है। किसी दूसरे के साथ भयानक दुख से होकर निकलने के बाद हमें लग सकता है कि हमने अन्ततः खोज लिया है कि प्रेम क्या होता है। लगता है कि प्रेम की हमेशा शुरुआत ही होती है।

विश्वास का आरम्भ ही होता है (11:15)

विश्वास भी प्रेम की तरह है क्योंकि, यह भी हमेशा आरम्भ ही होता है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना रचित सुसमाचार में, हमारे अध्याय 11 तक पहुंचने के समय चेले पहले ही

यीशु पर विश्वास करते थे। अन्द्रियास ने उसी दिन विश्वास कर लिया था जब वह यीशु के पीछे चलने के लिए यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को छोड़कर आया था (1:41), फिलिप्पुस ने उसी दिन विश्वास कर लिया था जब यीशु ने उसे बुलाया था (1:45) और नतनएल ने भी तभी विश्वास कर लिया था जब यीशु ने उससे कहा था कि उसने उसे अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था (1:49)। काना में विवाह समारोह में गए चेलों ने भी तभी विश्वास कर लिया था जब उन्होंने देखा था कि यीशु ने पानी की मय बना दी थी (2:11)। हमें बताया गया है कि पतरस और अन्य चेलों ने भी जिन्होंने पांच हज़ार लोगों को भोजन करते देखा और जीवन की रोटी पर संदेश सुना था, विश्वास किया (6:69)। विश्वास की इन सभी बातों के बावजूद, यीशु ने अपने चेलों को बताया कि वह लाज़र को जिलाने का अवसर मिलने पर प्रसन्न था कि वे विश्वास करें (11:15)!

विश्वास ऐसा ही है अर्थात यह हमेशा नये सिरे से आरम्भ होता है। हम में से बहुत से लोग पहले ही विश्वास करते हैं, कम से कम कुछ दर्जे तक तो अवश्य करते हैं। फिर एक दिन हममें कुछ ऐसी बातें होती हैं जो इतना जीवन बदलने वाली होती हैं कि हमें दोबारा कभी विश्वास नहीं मिलता। ऐसा विश्वास एक आशीष या परीक्षा अर्थात किसी बच्चे का जन्म या पचास फुट से गिरने में मिल सकता है। अचानक हम देखते हैं कि सब कुछ बदल गया और ऐसा लगता है जैसे विश्वास फिर से आरम्भ हो रहा है!

आज यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें विश्वास करने के लिए कहता है (20:31)। हम में से बहुत से लोग उस पुकार को सुनते और सोचते हैं, ''मैं तो पहले ही विश्वास करता हूं।'' परन्तु यदि हम सुनें, ढूंढ़ें और उसे मानें तो देख सकते हैं कि हमारे लिए विश्वास केवल एक आरम्भ ही है!

विश्वास बढ़ने का कोई गीत, जैसे ''आसमां पे शहर होगा ...।''

विश्वास प्रतिज्ञा से परिपूर्ण है (11:25, 26, 40)

मरथा जब बैतनिय्याह के बाहर यीशु से मिली, तो उसका भाई चार दिन से कब्र में मृत पड़ा था। उसे इस बात का पछतावा हुआ कि यदि यीशु वहां होता तो उसका भाई न मरता। उसके शोक के जवाब में, यीशु ने कहा, ''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?'' (11:25, 26)। यीशु के शब्दों में विश्वास करने की जबर्दस्त प्रेरणा मिलती है। विश्वास बहुत ही कठिन कार्य है और आलसी व्यक्ति इसे पाने का प्रयास नहीं करता। विश्वास हम केवल इसलिए नहीं करते कि हम विश्वास करना चाहते हैं, बल्कि यदि हम विश्वास न करना चाहें तो हमें विश्वास कभी नहीं होगा। विश्वास के लिए समर्पण, आज्ञाकारिता, बलिदान और कभी-कभी आंसुओं की भी आवश्यकता होती है। परन्तु विश्वास करने वालों के लिए बहुत बड़ी प्रतिज्ञा है।

इस परिप्रेक्ष्य में, विश्वास कॉलेज में दिए गए कठिन कार्य की तरह है; जिसे छात्र

इसलिए करता है क्योंकि उसके साथ अच्छी नौकरी पाने की प्रतिज्ञा है। नौकरी में कठिन कार्य करने का प्रतिफल अच्छा वेतन और उन्नति के रूप में मिलता है। इस बात में कोई गलती न करें कि विश्वास कोई पुरस्कार नहीं कमाता, बल्कि लम्बे, कठिन कई बार विश्वास की परीक्षा लेने वाले मार्ग पर चलते रहने की प्रेरणा हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं से ही मिलती है।

विश्वास पर गीत, जैसे ''तुझ ही पर है ईमान ... ।''

विश्वास यीशु पर ही केन्द्रित है (11:27, 42)

यूहन्ना का विश्वास हमें यीशु में विश्वास की ओर ले जाता है। हमारी आवश्यकता माता-पिता में विश्वास, प्रेरितों में विश्वास, अन्य मसीहियों में विश्वास, कलीसिया में विश्वास और यहां तक कि विश्वास में विश्वास नहीं बल्कि यीशु में विश्वास करना है।

मरथा ने विश्वास के अपने शानदार वाक्य में, यीशु को बताया, ''*... मैं विश्वास कर चुकी हूं,* कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है'' (11:27)। जब यीशु, उसके चेले, मरथा, मरियम और शोक करने वाले लोगों की भीड़ लाज़र की कब्र के बाहर खड़ी थी, तो यीशु ने पिता से यह कहते हुए प्रार्थना की, ''और मैं जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उनके कारण मैंने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है'' (11:42)। यह वाक्य यूहन्ना रचित सुसमाचार के शेष भाग से मेल खाता है, जिसका उद्देश्य ही यह विश्वास उत्पन्न करना है कि ''यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है'' (20:31)।

जॉन पैटन ने अफ्रीका में एक मिशनरी के रूप में बहुत से लोगों को वचन सिखाकर बपतिस्मा दिया था। क्योंकि उन लोगों की भाषा में बाइबल उपलब्ध नहीं थी इसलिए पैटन ने बाइबल के अनुवाद का थका देने वाला, बहुत ही कठिन कार्य आरम्भ किया। उसका कार्य तब तक सफलतापूर्वक चलता रहा जब तक उसने ''विश्वास'' शब्द का अनुवाद करने का प्रयास नहीं किया। जैसे कि अजीब सा लग सकता है, परन्तु इस भाषा में ''विश्वास'' के लिए कोई शब्द ही नहीं था। ''विश्वास'' के लिए शब्द के बिना बाइबल का अनुवाद कैसे हो सकता है ?

फिर, एक दिन जब पैटन भाषा की इस समस्या से जूझ रहा था तो गांव का एक मसीही आदमी उससे मिलने आया। यह आदमी दिन भर के काम-काज से थका हुआ था। कुर्सी पर बैठते हुए उसने राहत की एक लम्बी सांस ली और कहा, ''अपना सारा बोझ किसी चीज पर डाल देना कितना अच्छा लगता है।'' पैटन को समझ आ गया कि ''विश्वास'' के लिए उसे एक अभिव्यक्ति मिल गई थी अर्थात यह कि विश्वास करने का अर्थ ''अपना सारा बोझ यीशु पर डाल देना'' है।[1] विश्वास यीशु पर ही केन्द्रित है इसके सिवा कुछ और नहीं।

भरोसे का गीत, जैसे ''महिमा से तू जो भरा हुआ ... ।''

विश्वास फूट डालता है (11:45, 46)

लाज़र को कब्र से बाहर आकर जीवित चलते हुए देखकर लोगों में दो तरह के विचार बन गए थे। उन्होंने लाज़र को मरा हुआ देखा था, उसे गाड़ने के लिए तैयार किया गया था, उसे कब्र में डाला था और अन्त में कब्र के द्वार पर एक पत्थर भी रखा था। उन्होंने अपनी आंखों से यह सब देखा था। फिर, यीशु के इस आश्चर्यकर्म के कारण, यही लोग लाज़र के जी उठने के गवाह भी बन गए थे! क्या वे विश्वास कर लें? वे निर्णय लेने से बच नहीं सकते थे।

यूहन्ना ने उस फूट के बारे में लिखा, जो उस दिन आश्चर्यकर्म को देखने वाले लोगों में पड़ी थी:

> तब जो यहूदी मरियम के पास आए थे, और उसका यह काम देखा था, उन में से बहुतों ने उस पर विश्वास किया । परन्तु उन में से कितनों ने फरीसियों के पास आकर यीशु के कामों का समाचार दिया (11:45, 46)।

हैरानी इस बात की है कि इन लोगों ने भी देखा था कि क्या हुआ था परन्तु उनकी प्रतिक्रिया अलग-अलग थी। कइयों ने परमेश्वर की सामर्थ देखी है, सो उन्होंने अपना विश्वास यीशु में जताया। दूसरों ने इन घटनाओं को केवल मज़ेदार गपशप के रूप में ''देखा'' और यहूदी अगुओं को यीशु द्वारा पैदा की गई हलचल को बताने के लिए यरूशलेम में चले गए। लोगों में उस दिन पड़ी फूट किसी भी तरह से कहानी का महत्वहीन भाग नहीं है। इसके विपरीत, फूट यीशु की कहानी का स्वभाव है अर्थात जब लोग यीशु के बारे में सुनते हैं, तो उन्हें उसकी सच्ची पहचान के बारे में इधर या उधर में से एक निर्णय लेना ही पड़ता है। इसके बीच का कोई स्थान नहीं है।

यीशु और प्रेरित यूहन्ना दोनों हमें बिना किसी हिचकिचाहट के एक निर्णय लेने का दबाव डालते हैं। क्या यीशु परमेश्वर का पुत्र है या वह कोई धोखेबाज था? या तो वह परमेश्वर है या धोखेबाज, जो मृत्यु दण्ड के योग्य है। आपका क्या निर्णय है?

समर्पण का गीत जैसे, ''यीशु के पीछे मैं चलने लगा।''

विश्वास डराने वाला है (11:48)

उनमें से कई लोग जिन्होंने लाज़र को जी उठे देखा था यरूशलेम में महायाजकों और फरीसियों को यह बताने के लिए गए कि नासरत से आए उस गुरु ने क्या किया था। वहां हुई बातें बताते हुए उन्होंने शिकायत की, ''यदि हम उसे यों ही छोड़ दें, तो सब उस पर विश्वास ले आएंगे और रोमी आकर हमारी जगह और जाति दोनों पर अधिकार कर लेंगे'' (11:48)। उन्होंने जान लिया कि यीशु में विश्वास करने से लोगों के जीवन, परिवार और यहां तक कि देश भी बदल जाएंगे। शायद आज के बहुत से मसीहियों से अधिक उन्होंने इस बात को समझ लिया कि विश्वास कितना ''खतरनाक'' है। प्रेम के बारे में एक पुराना गीत है जिसका

अनुवाद इस प्रकार है कि ''यह तुम्हें ऊपर उठाएगा, कभी नीचे नहीं गिरने देगा, तुम्हारी दुनिया को पूरी तरह बदल देगा।'' यही बात यीशु में विश्वास के बारे में कही जानी चाहिए।

इस विश्वास के सम्बन्ध में उम्मीद करने की बहुत कम प्रवृत्ति पाई जाती है। बहुत से मसीही लोगों ने विश्वास को बहुत आसान, लचीला और ऐसा बना दिया है जैसे कि विश्वास की आवश्यकता ही न हो। विलबर रीस ने इस प्रवृत्ति को नीचे दिए व्यंग्यपूर्ण पद्य में व्यक्त किया है:

> मैं 3 डॉलर का परमेश्वर खरीदना चाहता हूं, जो मेरी आत्मा को तंग न कर सके या सोते हुए मुझे न सताए कृपया दे दीजिए, बल्कि गर्म दूध के कप जितना या धूप में झपकी लेने जितना न सताए। मुझे इतना नहीं चाहिए कि वह मुझे किसी काले आदमी से प्रेम करने, या किसी शरणार्थी के साथ बीज चुनने के लिए कहे। मुझे आनन्द चाहिए, काया पलटना नहीं। मुझे मां के गर्भ की गरमाहट चाहिए, नया जन्म नहीं। मुझे कागज़ के थैले में एक पाउंड अनन्तकाल चाहिए। मैंने 3 डॉलर का परमेश्वर लेना है, कृपया दे दीजिए।[2]

जिस विश्वास के लिए यीशु हमें बुलाता है वह हमारे जीवनों को पूरी तरह से बदल सकता है। यूहन्ना यह सुनिश्चित करना चाहता था कि हम यीशु के पीछे चलने में आने वाले खर्च को समझ लें। हमें दुख मिल सकता है, हम सताए जा सकते हैं, और हो सकता है कि हमारा सब कुछ छिन जाए। विश्वास की प्रतिज्ञाओं की तुलना में इस पर आने वाला खर्च नगण्य लगने लगता है!

दृढ़ विश्वास का गीत।

पाद टिप्पणियां

[1]किंग डंकन, ''फेथ,'' डायनॉमिक इलस्ट्रेशन्ज़ (नाक्सविल, टैनि.: सेवन वर्ल्ड्स, प्रैस, जनवरी/फरवरी 1995)। [2]चार्ल्स स्विंडॉल, *इम्प्रूविंग योअर सर्व* (वाको, टैक्सस: वर्ड पब्लिशिंग कं. 1981), 29.